अव्यक्त इशारे
सच्चे दिल से साहेब को राज़ी कर परमात्म दिलतख्तनशीन बनो

1) सच्चे साहेब को राज़ी करने के लिए विशेष अटेन्शन रखो - सच्ची दिल, कोई भी बात अन्दर है तो सच्ची दिल से, महसूसता से बापदादा के आगे रखो। बापदादा के आगे महसूस करेंगे तो दिल खाली हो जायेगी, किचड़ा खत्म हो जायेगा। अगर दिल खाली नहीं है तो दिलाराम कहाँ बैठेगा।

2) सच्ची दिल से कहो बाबा जो हूँ, जैसी हूँ, आपकी हूँ। इसके साथ बुद्धि की लाइन क्लीयर चाहिए। लाइन में कोई भी डिस्ट्रबेन्स नहीं हो, कटआफ नहीं हो। बापदादा जो एक्स्ट्रा समय पर शक्ति देने चाहते हैं, दुआयें देने चाहते हैं, एक्स्ट्रा मदद देने चाहते हैं, अगर डिस्ट्रबेन्स होगी तो वह मिल नहीं सकेगी इसलिए दिल सच्ची और साफ हो, कोई भी छोटी-मोटी बातों का किचड़ा दिल में न हो।

3) कहावत है सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। सच्ची दिल वाले परमात्म दिलतख्तनशीन बन जाते हैं। सच्ची दिल से दिलाराम बाप को अपना बना लेते हैं। दिलाराम बाप सच्ची दिल के सिवाए सेकण्ड भी याद के रूप में कहाँ ठहर नहीं सकते। भोले भक्त तो भगवान को कण-कण में ढूँढते रह गये लेकिन भोलेनाथ के भोले बच्चों ने उसे पा लिया। बड़े दिमाग वालों ने नहीं पाया लेकिन सच्ची दिल वालों ने ही पाया।

4) सच्चे दिल की सेवा स्वयं में खुशी और शक्ति का अनुभव कराती है। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी तब होता है जब बेहद के सेवाधारी बन फ्राकदिल, उदारचित होकर प्राप्ति के खजानों को बाँटते हैं। सेवा की लगन का फल, विघ्न सहज ही विनाश हो जाते हैं। विघ्नो को हटाने में समय नहीं देना पड़ता। सच्ची दिल वाले बच्चे सहज ही साकार, आकार, निराकार तीनों रूपों में बाप के साथ का अनुभव करते हैं क्योंकि उन पर साहेब राज़ी रहता है।

5) जो सच्ची दिल से यज्ञ सेवा करते हैं उन्हें एक सेकण्ड की सेवा का भी बहुत फल मिलता है, जो फल 21 पीढ़ी तक खाते रहेंगे इसलिए सेवा में सदा बिजी रहो। मंसा से शुद्ध संकल्प की सेवा करो, सम्पर्क-सम्बन्ध वा वाणी द्वारा बाप का परिचय देने की सेवा करो। जो बच्चे मुहब्बत से सच्ची दिल से कमाते और सेवा में लगाते हैं उनका ही सफल होता है। उन पर साहेब राज़ी होता है।

6) दिलाराम बाप को सच्ची दिल वाले बच्चे ही पसन्द हैं। दुनिया का दिमाग न भी हो लेकिन बाप को दिल वाले पसन्द हैं। दिमाग तो बाप इतना बड़ा दे देता है जिससे रचयिता को जानने से रचना के आदि, मध्य, अन्त की नॉलेज जान लेते हो, नम्बर भी बनते हैं सच्ची साफ दिल के आधार से। सेवा के आधार से नहीं। सेवा में भी सच्ची दिल से सेवा की वा सिर्फ दिमाग के आधार से सेवा की! दिमाग वाले नाम कमाते हैं, दिल वाले दुआयें कमाते हैं।

7) बापदादा सच्ची दिल पर राज़ी है, तीव्र दिमाग वालों पर नहीं। तो दिल का अनुभव दिल जाने, दिलाराम जाने। समाने का स्थान दिल कहा जाता है, दिमाग नहीं। नॉलेज को समाने का स्थान दिमाग है, लेकिन माशूक को समाने का स्थान दिल है। जो दिल के स्नेह से याद नहीं करते, सिर्फ नॉलेज के आधार पर दिमाग से याद करते वा सेवा करते, उन्हों को मेहनत ज्यादा करनी पड़ती, सन्तुष्टता कम होती है।

8) हर समय सेवा की विधि के महत्व को जानकर महान् बनो, जितना भाषण करने वाला पद पा लेता है उतना योगयुक्त, युक्तियुक्त स्थिति में स्थित रहने वाला 'बर्तन मांजने वाला' भी श्रेष्ठ पद पा सकता है। सिर्फ याद रखो - सच्ची दिल पर साहेब राज़ी होता है और जब दाता, वरदाता राज़ी हो गया तो

क्या कमी रहेगी! वरदाता वा भाग्यविधाता ज्ञान-दाता भोले बाप को राज़ी कर लो तो माया से भी बच जायेंगे और धर्मराज काज़ी से भी बच जायेंगे।

9) जो सच्ची दिल से दिल का समाचार बाप के आगे रखते हैं, तो सच्ची दिल पर बाप सदा राज़ी है इसलिए दिल के समाचार में जो भी कोई छोटी-छोटी बातें आती हैं, वह बाप की विशेष याद के वरदान से समाप्त हो ही जायेंगी। बाप का राज़ी होना अर्थात् सहज बाप की मदद से मायाजीत बनना। विशाल दिमाग वाले ज्ञान की प्वाइंट्स को अच्छी तरह धारण कर सकते हैं, प्वाइंट्स रिपीट कर सकते हें लेकिन दिल से याद करने वाले प्वाइट अर्थात् बिन्दू रूप बन सकते हैं।

10) सच्ची दिल वाले बच्चों को विशेष बाप की दुआयें प्राप्त होने कारण समय प्रमाण उनका दिमाग युक्तियुक्त, यथार्थ कार्य स्वत: ही कर लेता है क्योंकि यथार्थ कर्म, बोल वा संकल्प होने कारण समय प्रमाण वही टचिंग उनके दिमाग में आयेगी क्योंकि बुद्धिवानों की बुद्धि (बाप) को राज़ी किया हुआ है, जिसने भगवान को राज़ी किया वह स्वत: ही राजयुक्त, युक्तियुक्त होता है।

11) ब्राह्मण जीवन में विशाल दिमाग भी चाहिए तो सच्ची दिल भी चाहिए। सच्ची दिल वाले को दिमाग की लिफ्ट स्वत: मिल जाती है इसलिए सदा यह चेक करो कि सच्ची दिल से साहेब को राज़ी किया है! सिर्फ अपने मन को या सिर्फ कुछ आत्माओं को राज़ी नहीं करना है ¡ सच्चे साहेब को राज़ी करना है तो अलबेलेपन का चश्मा उतारकर स्व-उन्नति का यथार्थ चश्मा पहनकर रहो।

12) जो बच्चे स्व-पुरुषार्थ का सच्चा समाचार देते हैं उन पर बाप राज़ी रहता है लेकिन स्वयं भी स्वयं के संस्कारों से, संगठन से राज़युक्त अर्थात् राज़ी रहो। एक-दो के संस्कारों के राज़ को, परिस्थितियों को जानकर चलो, यही राज़युक्त स्थिति है। बाकी सच्चे दिल से अपना पोतामेल देते हो तो पिछला खाता समाप्त होता है और स्नेह की रुहरिहान सदा समीपता का अनुभव कराती है।

13) कोई भी काम अगर खुशी-खुशी से करके कमाई करते हो तो वह पैसा भी खुशी दिलायेगा। वह दो रुपया भी दो हजार का काम करेगा और वह दो लाख दो रुपये का काम करेगा। सच्ची दिल वालों की कमाई भी सच्ची होती है। उन्हें दाल-रोटी जरुर मिलती है। सुस्त रहने वाले को नहीं, काम तो करना ही पड़ेगा, लेकिन वह काम खुशी से योगयुक्त होकर करो तो कमी नहीं पड़ेगी। चिंता नहीं होगी।

14) साहेब को राज़ी करने के लिए दिल की स्वच्छता चाहिए, इसलिए कहते हैं सच्चाई ही सफाई है। अपने स्व-उन्नति अर्थ जो भी पुरुषार्थ है, जैसा भी पुरुषार्थ है, वह सच्चाई से बाप के आगे रखना, यह है स्वयं के पुरुषार्थ की स्वच्छता। दूसरा – सेवा करते सच्ची दिल से कहाँ तक सेवा कर रहे हैं, उसकी स्वच्छता। अगर कोई भी स्वार्थ से सेवा करते हो तो उसको सच्ची सेवा नहीं कहेंगे। इतने मेले कर लिये, इतने कोर्स करा लिये लेकिन स्वच्छता और पवित्रता की परसेन्ट कितनी रही? ड्यूटी नहीं है लेकिन सेवा निज़ी संस्कार है, स्व-धर्म है, स्व-कर्म है।

15) बाप को सच्ची दिल प्यारी लगती है। जो गांव वाले भोले बच्चे हैं उन्हें झूठ-कपट करने नहीं आता। चालाक, चतुर जो होते हैं उन्हें यह सब बातें आती हैं। तो जिसकी दिल भोली है अर्थात् दुनिया की मायावी चतुराई से परे हैं, वह बाप को अति प्रिय हैं। बाप सच्ची दिल को देखता है। बाकी पढ़ाई को, शक्ल को, गाँव को, पैसे को नहीं देखता है। सच्ची दिल चाहिए, इसलिए बाप का नाम दिलवाला है।

16) कोई-कोई बच्चे बापदादा को अपना सच्चा समाचार देते हैं, सच बताने में कभी डरते नहीं, छिपाते नहीं। ऐसी सच्ची दिल वाले बच्चे बाप के डबल प्यार के पात्र हैं। जब कोई बात बाप को सुना दी,

तो उसे अपने अन्दर बार-बार रिपीट नहीं करो, वर्णन नहीं करो ये हो गया, ये हो गया....। हो गया, फिनिश। आगे के लिये अटेन्शन दो तो वह बात सदा के लिए समाप्त हो जायेगी।

17) कभी कोई भी शारीरिक बीमारी हो, मन का तूफान हो, तन में हलचल हो, प्रवृत्ति में हलचल हो, सेवा में हलचल हो, किसी भी प्रकार की हलचल में दिलशिकस्त कभी नहीं होना। जैसे बाप बड़ी दिल वाले हैं, ऐसे बड़ी दिल वाले बनो। अगर कोई हिसाब-किताब आ भी गया, दर्द आ गया। उसमें दिलशिकस्त होकर बीमारी को बढ़ाओ नहीं। हिम्मत वाले बनो तो बाप भी मददगार बनेंगे। मन में जब कोई भी उलझन आती है तो ऐसे समय पर निर्णय शक्ति चाहिये और निर्णय शक्ति तब आ सकती है जब आपका मन बाप की तरफ हो, दिल में सच्चाई हो, इसलिए किसी भी प्रकार की उलझन में दिलशिकस्त कभी नहीं बनो।

18) जो बाप के साथी हैं, सच्चे हैं तो कैसी भी हालत में बापदादा उन्हें दाल-रोटी जरूर खिलायेगा। ऐसे नहीं कि काम से थक करके बैठ जाओ और कहो बाबा दाल-रोटी खिलायेगा। ऐसे अलबेले या आलस्य वाले को नहीं मिलेगा। बाकी सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है। अभी सब अति में जा रहा है और जाना है। बातें तो अनेक आयेंगी लेकिन आप ट्रस्टी बन, साक्षी बन परिस्थिति को बाप से शक्ति ले हल करो। पहले बिल्कुल न्यारे ट्रस्टी बन जाओ। मेरे को तेरे में परिवर्तन कर दो तो बाप की टचिंग आयेगी।

19) बापदादा देख रहे हैं कि बच्चे सच्चाई से अपना पोतामेल लिखते हैं। साफ दिल है, इसलिए साफ दिल मुराद हांसिल हो जाती है। जो उमंग होता है, आशायें रखते हैं वह पूरी हो जाती हैं। बच्चे, सच बोलते हैं। चाहे गिरते भी हैं तो भी सच बोलते हैं, चढ़ते हैं तो भी सच बोलते हैं। तो सच्ची दिल पर साहेब राज़ी होता है लेकिन अब ऐसा वायुमण्डल बनाओ जो एक दो को देखकर सभी रेस में लग जायें। रीस नहीं रेस करें।

20) वर्तमान समय में सच्चाई और सफाई की बहुत आवश्यकता है। दिल में भी सच्चाई, परिवार में भी सच्चाई और बाप से भी सच्चाई। इसके लिए दो बातों का ध्यान देना। 1- सदा संकल्प, बोल वा कर्म में एकॉनामी का अवतार बनना। 2- बुद्धि की लाइन क्लीन और क्लीयर रखना। इसको ही बापदादा कहते हें सच्चे दिल पर साहेब राज़ी, सच्ची दिल, साफ दिल।

21) बापदादा सभी बच्चों से क्रोध के अंश मात्र का भी त्याग कराना चाहते हैं, इसका त्याग सच्ची दिल से करो तो सच्ची दिल पर साहेब राज़ी होगा। मन्सा में भी किसके प्रति घृणा भाव का अंश न हो। घृणा वा द्वेष भाव रखने से उस आत्मा के प्रति जोश आता है, जो डिस-सर्विस का कारण बनता है इसलिए जैसे ब्रह्मचर्य के ऊपर अटेन्शन देते हो, ऐसे हर आत्मा के प्रति शुभ भाव, प्रेम भाव इमर्ज रहे। कभी मूड ऑफ न हो। कभी कोई की बात को ठुकराओ नहीं।

22) वर्तमान समय चारों ओर भय वा दुःख का वातावरण है ऐसे वातावरण में सदा निर्भय और हिम्मतवान बनो। कोई भी दृश्य देखकर भय में नहीं आना, यह क्या हो रहा है, मर रहा है... मर वह रहा है, भय आपको आ रहा है। उस आत्मा को रहमदिल की भावना से सहयोग दो, भय में नहीं आओ। भय सबसे बड़े में बड़ा भूत है। सिर्फ मरने का ही भय नहीं होता, कई बातों का भय होता है। अपनी कमजोरी के कारण भी भय होता है। उन सबमें निर्भय बनने का सहज साधन है, साफ दिल, सच्ची दिल। तो भय कभी नहीं आयेगा, क्योंकि साहेब राज़ी तो और भी सब राज़ी।

23) बापदादा सदा कहते हैं कि जिस भी सेन्टर पर मातायें होती हैं वह सेन्टर सदा फलीभूत होता है। चाहे कमायें नहीं लेकिन दिल बड़ी होती है, भावना बड़ी होती है। तो बाप भी भावना और सच्ची

दिल को पसन्द करते हैं। भोले बाप को राज़ी करने का साधन है - सच्ची दिल। सच्ची दिल बाप को क्यों प्रिय लगती है? क्योंकि बाप को कहते ही हैं सत्य। गॉड इज टुथ कहते हैं ना! तो बापदादा को साफ दिल, सच्ची दिल वाले बहुत प्रिय हैं। ऐसे है ना! साफ दिल है, सच्ची दिल है। सत्यता ही ब्राह्मण जीवन की महानता है।

24) बाप की हर बच्चे प्रति शुभ आशायें, शुभ उम्मीदें हैं कि आप मेरे बच्चे ही कल्प-कल्प के विजयी हो तो निश्चयबुद्धि बन दृढ़ संकल्प करो कि विजय मेरे गले का हार है। सच्ची दिल पर साहेब मददगार है ही। सिर्फ निमित्त भाव को धारण कर हद के मैं और मेरे को त्याग, हर कदम में जमा का खाता बढ़ाते चलो तो सब बातों में विन कर नम्बरवन बन जायेंगे।

25) ज्ञानी तू आत्मा बाप को प्रिय हैं लेकिन ज्ञान के साथ-साथ सच्ची दिल, अविनाशी बाप का स्नेह आवश्यक है। अगर ज्ञान के साथ, सच्ची दिल साफ दिल का स्नेह है तो कहाँ-कहाँ मेहनत नहीं लगती। जहाँ मुहब्बत है वहाँ मेहनत नहीं। निरन्तर याद, निरन्तर लव में लीन होने वाली आत्मा पहाड़ को भी राई बनाने वाली होती है क्योंकि स्नेह में प्राप्तियां स्पष्ट अनुभव होती हैं।

26) बापदादा सच्ची दिल, साफ दिल वाली स्नेही आत्मा, लवलीन आत्मा को हर समय सहयोग देने के लिए हाज़िर रहते हैं। जो हर श्रीमत पर हाज़िर होता है तो बाप भी कहते हैं मैं हज़ूर भी हाज़िर हूँ। आप जी हज़ूर करो तो हज़ूर सदा हाज़िर है। सहज याद तो ब्राह्मण जीवन का नेचुरल गुण है।

27) बापदादा एक तो चाहते हैं सच्ची दिल, साफ दिल का स्नेह। भोलानाथ बाप सच्ची दिल पर बहुत सहज राजी हो जाते हैं। जब भोलानाथ राज़ी तो धर्मराज को भी बाय-बाय करके चले जायेंगे। वह भी आप बाप-समान बच्चों को नमस्ते करेगा, झुकेगा। आप ऐसे बाप के प्यारे हो लेकिन सिर्फ चेक करना, कोई स्नेह में लीकेज नहीं हो। अपने देहभान वा दूसरे की कोई भी विशेषता के प्रभाव की लीकेज खत्म।

28) कभी भी दिल छोटी नहीं करना। बड़ी दिल, बड़ा बाबा। बापदादा का स्लोगन है बड़ी दिल, सच्ची दिल, साफ दिल तो हर मुराद हांसिल। जो भी किचड़ा आवे तो उस किचड़े को अपने पास नहीं रखना। जैसे कमरे की सफाई न करो तो मच्छर हो जाते हैं, फिर बीमारियां होती हैं, ऐसे अगर मन में कोई भी बात रख ली, निकाला नहीं तो वह वृद्धि को पाती रहेगी तो मन को बीमार कर देंगी।

29) बापदादा का सभी बच्चों से प्यार है इसलिए कहते हैं कि बच्चे अपना वर्तमान और भविष्य निर्विघ्न बनाओ। संगदोष में, हद की प्राप्तियों की आकर्षण में नहीं आओ। ऐसी-ऐसी बातें समझदार बनके समाप्त करो। बापदादा मदद करेगा लेकिन सच्ची दिल, साफ दिल हो तो मुराद हांसिल, करके देखो दिल से। सच्ची दिल और मुराद हांसिल नहीं हो, यह हो नहीं सकता।

30) रोज़ रात को सोने के पहले बापदादा को गुडनाइट करने के पहले अपने सारे दिन का पोतामेल देकर अपने बुद्धि को खाली करके गुडनाइट करना और बाप की याद में सो जाना फिर आपकी नींद बहुत अच्छी होगी। यदि बाप के रूप में सारा पोतामेल सच्ची दिल का दे दिया तो आपको धर्मराजपुरी में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी हो जायेगा।

31) कोई भी कमजोरी जरा सा स्वप्न मात्र भी हो, उसे दृढ़ संकल्प से बाप को दे दो तो बापदादा की एक्स्ट्रा मदद मिलेगी। सच्ची दिल से देना, ऐसे नहीं देखता हूँ, होता है या नहीं होता है! सच्ची दिल से अगर संकल्प करेंगे तो कुछ न कुछ एक्स्ट्रा मदद मिलेगी। दिल से पुरुषार्थ करेंगे तो बाप की मदद अवश्य मिल जायेगी।